अध्याय 29

याकूब का विवाह

याकूब हारान की ओर बढ़ा जहाँ उसकी भेंट नगर[1] के बाहर कुएँ पर राहेल, लाबान की पुत्री से हुई। चाहे परमेश्वर की दिव्य रक्षा स्पष्ट है, लाबान के कपट के कारण दृश्य जटिल हो गया। याकूब ने अपने भाई एसाव और अपने पिता इसहाक के विरुद्ध झूठ और धोखे को बोया था; परन्तु अब वह अपने मामा के छल से दुःख उठा रहा था।

लाबान ने अपने भांजे याकूब के प्रति उदारवादी होने का नाटक किया, परन्तु उसने स्थिति से अपना लाभ उठाने का निश्चय किया। उसको याद था कि उसकी बहन का विवाह अब्राहम के पुत्र इसहाक से हुआ था, जो बहुत ही धनी पुरुष था (24:1-67)। उसने अपने कपट पूर्ण इरादों से जितना हो सकता था याकूब का लाभ उठाने का निश्चय किया, यदि धन से नहीं तो उसके किए हुए काम से उसी सम्पत्ति बढ़ेगी। याकूब के जीवन में पहली बार स्वयं को हीन स्थिति में पाया। क्योंकि उसके पास देने को दहेज नहीं था, तो उसे अपने ससुर के सामने उसकी पुत्री से विवाह करने के लिए उसका काम करने के लिए विनम्र होना पड़ा। राहेल से विवाह करने के लिए याकूब ने लाबान के लिए सात वर्ष कार्य करने का जल्दबाज़ी से वचन दे दिया। परन्तु, वे वर्ष उसे राहेल की प्रीति के कारण "थोड़े ही दिनों" के बराबर जान पड़े (29:20)।

अपने कार्य के सात वर्ष पूरे होने बाद, याकूब ने वैध रूप से अपनी पत्नी राहेल की मांग की। जब विवाह कक्ष में उसे पाने का समय आया, लाबान ने राहेल के स्थान पर अपनी बड़ी पुत्री लिआ को दे दिया। कोई व्यक्ति उसके सदमे, निराशा और आक्रोश की केवल कल्पना कर सकता है जो याकूब ने उस सुबह महसूस की होगी, जब उसने जाना होगा कि उसके ससुर ने उसके साथ झूठ बोला और धोखा किया और उसे उसके सात वर्ष की कठिन मज़दूरी के बदले में किसी अन्य लड़की से विवाह करवा दिया। पहली बार, याकूब यह समझने लगा होगा कि उसक भाई एसाव ने कैसा महसूस किया होगा इतने वर्षों की प्रतीक्षा के बाद कि उसे अपने पिता की मृत्यु पर आशीष मिलने वाली है और यह पाया कि उसके छोटे भाई ने उनके दृष्टिहीन पिता से धोखा करके उन्हें छीन लिया। याकूब ने गलत तरीके से एसाव होने का नाटक किया, बड़ा पुत्र होने का, अपने पिता को धोखा देने का, इसलिए, लिआ बड़ी बहन ने राहेल के भेस में आकर याकूब को धोखा दिया।

याकूब ने आखिरकार दोनों ही बहनों लिआ और राहेल से विवाह किया। लाबान ने दोनों पुत्रियों को दहेज के रूप में दासियाँ दीं (अर्थात जिल्पा और बिल्हा)। संतान उत्पन्न करने के संदर्भ में चारों ही स्त्रियाँ सहभागी हुईं, जिससे दोनों ही बहनों की अपने पति का प्यार पाने के लिए आपस में टकराहट होती रही (29:31-30:24)।

याकूब की राहेल से भेंट (29:1-14)

[1]फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया, और पूर्व्वियों के देश में आया। [2]और उसने दृष्टि करके क्या देखा, कि मैदान में एक कुआँ है, और उसके पास भेड़-बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं; क्योंकि जो पत्थर उस कुएं के मुंह पर धरा रहता था, जिस में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था, वह भारी था। [3]और जब सब झुण्ड वहां इकट्ठे हो जाते तब चरवाहे उस पत्थर को कुएं के मुंह पर से लुढ़का कर भेड़-बकरियों को पानी पिलाते, और फिर पत्थर को कुएं के मुंह पर ज्यों का त्यों रख देते थे। [4]सो याकूब ने चरवाहों से पूछा, हे मेरे भाइयो, तुम कहां के हो? उन्होंने कहा, हम हारान के हैं। [5]तब उसने उन से पूछा, क्या तुम नाहोर के पोते लाबान को जानते हो? उन्होंने कहा, हां, हम उसे जानते हैं। [6]फिर उसने उन से पूछा, क्या वह कुशल से है? उन्होंने कहा, हां, कुशल से तो है और वह देख, उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लिये हुए चली आती है। [7]उसने कहा, देखो, अभी तो दिन बहुत है, पशुओं के इकट्ठे होने का समय नहीं: सो भेड़-बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जा कर चराओ। [8]उन्होंने कहा, हम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब सब झुण्ड इकट्ठे होते हैं तब पत्थर कुएं के मुंह से लुढ़काया जाता है, और तब हम भेड़-बकरियों को पानी पिलाते हैं। [9]उनकी यह बातचीत हो रही थी, कि राहेल जो पशु चराया करती थी, सो अपने पिता की भेड़-बकरियों को लिये हुए आ गई। [10]अपने मामा लाबान की बेटी राहेल को, और उसकी भेड़-बकरियों को भी देख कर याकूब ने निकट जा कर कुएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़का कर अपने मामा लाबान की भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। [11]तब याकूब ने राहेल को चूमा, और ऊंचे स्वर से रोया। [12]और याकूब ने राहेल को बता दिया, कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं, अर्थात रिबका का पुत्र हूं: तब उसने दौड़ के अपने पिता से कह दिया। [13]अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही लाबान उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको गले लगाकर चूमा, फिर अपने घर ले आया। और याकूब ने लाबान से अपना सब वृत्तान्त वर्णन किया। [14]तब लाबान ने याकूब से कहा, तू तो सचमुच मेरी हड्डी और मांस है। सो याकूब एक महीना भर उसके साथ रहा।

आयत 1. बेतेल में अपने अनोखे अनुभव के बाद, **याकूब** ने अपनी **यात्रा को जारी** रखा, और **पूर्व्वियों के देश में पहुँचा।** यह कहने का एक तरीका है कि उसने "पूर्व के लोगों" तक यात्रा की (NIV), जो कि आमतौर पर लोगों के समूह का

उल्लेख किया है जो कनान के पूर्वी क्षेत्रों में रहते थे, जिसमें यरदन नदी का पूर्वी क्षेत्र अर्थात सीरिया और उत्तरी अरब शामिल है (न्यायियों 7:12; 8:10; अय्यूब 1:3; यशा. 11:14; यिर्म. 49:28)। इस संदर्भ में, यह स्पष्ट रूप से हारान का ही उल्लेख करता है जो कि पूर्व और उत्तर कनान के पूर्वपश्चिम मेसोपोटामिया में स्थित था। यही वह देश था जिसमें याकूब को अब्राहम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए एक बड़े परिवार को बनाना था।

आयत 2. ज्यों ही याकूब हारान के पास पहुँचा, उसने **मैदान में एक कुएँ को देखा**। कुछ लोग सोचते हैं कि यह वही कुआँ था जहाँ अब्राहम के सेवक की भेंट रिबका से हुई थी (24:11-20)। जबकि एक सम्भावना है, जिस कुएँ का यहाँ उल्लेख है ऐसा दिखाई देता है कि पानी का स्रोत पहले के स्रोत से भिन्न दिखाई पड़ता है, इसके यह कारण हैं:

पहला, रिबका दिन के ठण्डे पहर वहाँ अन्य स्त्रियों के साथ कुएँ (शाब्दिक रूप से "जल के झरने से"; 24:13, 43) से जल भरने आई थी। यहाँ किसी जल के झरने का उल्लेख नहीं मिलता है; कुआँ जिसके पास याकूब पहुँचा था उसमें "खड़ा पानी था" और उसे **बड़े पत्थर** से ढका हुआ था।

दूसरा, राहेल चरवाहन थी और अपने पिता की भेड़ों को कुएँ के पास ला रही थी (29:9), परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि रिबका चरवाहन थी जो भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएं पर लाई थी। वह प्रत्यक्ष रूप से हारान में रहती थी और वह अपना घड़ा पानी के चश्में से भरने आई और भर कर नगर में अपने पिता के घर वापिस गई, जहाँ पर कुछ घरेलू पशुओं का बाड़ा (तबेला) था (24:25, 31)।

तीसरा, वह कुआँ जिस पर याकूब पहुँचा था वहाँ पहले ही कुएँ के पास **भेड़ों के तीन झुण्ड बैठे हुए थे**, और फिर राहेल वहाँ पहुँची, उससे वहाँ भेड़ों के चार **झुण्ड** हो गए थे जिन्हें पानी की ज़रूरत थी। यह तो असम्भव सा दिखाई देता है कि यह वही कुआँ था जिस पर नगर के लोग **पानी पीने** के लिए निर्भर थे। उत्पत्ति 26:18-33 संकेत करता है कि इसहाक और उसके दासों ने अपने डेरे के नज़दीक उस क्षेत्र में अपनी भेड़ों और जानवरों के लिए बहुत से कुएँ खोदे थे। जबकि 29:2 यह बताता है कि "मैदान में," यह सोचना उचित है कि यह और इस तरह के कई अन्य कुओं से जानवरों के लिए पानी लिया जाता था जो हारान के आस पास बिखरे हुए लोग थे। उसी समय, यह नगर के इतना करीब था कि राहेल अपने पिता लाबान को दौड़कर बताने गई कि उसकी बहन का पुत्र आया है; और वह याकूब से मिलने के लिए दौड़ा (29:12, 13)।

आयत 3. स्पष्ट है कि चरवाहों ने इससे पहले कि **कुएँ के मुँह से पत्थर लुढ़काते और भेड़ों को पानी पिलाते**, तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि **सारे झुण्ड वहाँ एकत्र नहीं हुए**। पानी कुएँ से निकाला जाता और नांद में भरा जाता (देखें 24:20)। जानवरों के पानी पीने के बाद, **चरवाहे कुएँ के मुँह को फिर उसी पत्थर से ढक देते थे**। बाइबल अंश इस तरह की प्रथा की कोई व्याख्या नहीं करता; परन्तु लम्बे समय तक प्राचीन पूर्वी देशों में कुएँ पर दूसरे चरवाहों की

प्रतीक्षा करने का निर्णय इस बात की पुष्टि थी कि कोई भी अपने हिस्से से अधिक अपने जानवरों लिए पानी ने ले।

यह प्रथा अभी हाल ही में मध्य पूर्वी देशों में देखी गई है। कुएँ का मुँह कभी कभी समतल, गोलाकार पत्थर से ढका रहता था जिसके बीचो बीच एक छेद होता था। यह पत्थर बड़े पत्थर से ढका रहता था जो कि उस छेद पर रहता था। दो या तीन व्यक्तियों की ज़रूरत होती थी इसे हटाने के लिए तभी यह पत्थर हटाया जा सकता था।[2]

आयत 4. जब **याकूब** उस कुएँ पर पहुँचा, वह बड़े ही कोमल स्वर से चरवाहों के साथ बोला, उनको अपने **भाइयों** के रूप में सम्बोधित किया। "भाई" के लिए इब्रानी शब्द אָח *(अख)* है, यह एक विस्तृत शब्द है जो अपने सगे भाई या किसी अन्य सम्बन्धी को उल्लेखित कर सकता है। यहाँ हो सकता है कि यह एक आम अभिवादन है, जिसका अर्थ "मित्र" है (देखें 19:7)। बाद में यह संदर्भ अच्छी तरह से फिट बैठता है, क्योंकि याकूब ने इस तरह की शब्दावली का इन अजनबियों के साथ मेलजोल बढ़ाने के लिए ही किया हो। याकूब का इस अभिवादन के बाद प्रश्न करना इस बात का संकेत है कि उसने अभी तक यह नहीं जाना था कि वह अपनी मंजिल तक पहुँच गया है। उसने पूछा**, तुम कहाँ के हो?** उनका उत्तर था, **हम हारान के हैं।**

चरवाहों के इस समाचार ने याकूब को बता दिया कि परमेश्वर ने उसे सही स्थान पर पहुँचाया है। उसी तरह से, जिस तरह से परमेश्वर के रक्षा करने वाले हाथ ने अब्राहम के सेवक की हारान के लिए अगुवाई की थी, जहाँ उसकी भेंट रिबका से हुई (24:7-10, 26, 27, 48, 50, 51)। भले ही इस समय परमेश्वर की अगुवाई और अधिक विचारशील थी, फिर भी यह वास्तविक थी। इसने याकूब के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा किया - "मैं तेरे संग हूँ" (28:15) - जैसे वह पत्नी ढूँढने के लिए अपने मामा के घर गया। लेखक अपने पाठकों को यह समझाना चाहता है कि यह संयोगवश नहीं था कि कुलपति इन चरवाहों के पास पहुँचा।

आयतें 5, 6. एक बार जब याकूब जान गया कि वह सही स्थान पर और लोग हारान से ही है, उसने उनसे पूछा, **क्या तुम नाहोर के पुत्र लाबान को जानते हो?** "पुत्र" בֵּן *(बेन)* इसके अर्थ "वंशज" के लिए प्रयोग किया गया है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो लाबान बतुएल का पुत्र था और नाहोर का पोता था (24:15, 24, 29)। जब उन पुरुषों ने उत्तर दिया कि वे लाबान का जानते हैं, याकूब ने फिर उनसे प्रश्न किया, **क्या वह कुशल से है?** "कुशल" के लिए यहाँ שָׁלוֹם *(शालोम)* इस शब्द को लिया गया है, जिसका अर्थ है "शान्ति से है"; यहाँ इसका सामान्य अर्थ है मन और शरीर में शान्ति। इब्रानी भाषा हिंदी भाषा समान ही है "स्वस्थ्य" या "कुशल होने"[3] का भाव। इसलिए, चरवाहों ने दूसरी सार्थक उत्तर दिया कि लाबान **कुशल** से है। उन्होंने यह भी कहा, **वह देख, उसकी बेटी राहेल भेड़-बकरियों को लिये हुए चली आती है।**

आयत 7. याकूब के चरित्र का एक भिन्न पक्ष प्रत्यक्ष रूप से सामने आया जब

उनकी बातचीत आगे बढ़ी, उसने चरवाहों के अल्हड़ व्यवहार से उसने सगर्व प्रश्न किया। उसको ऐसा दिखाई दिया कि यह पुरुष वहाँ कुएँ पर बैठे अपना समय नष्ट कर रहे हैं। आखिरकार **अभी जानवरों को एकत्र करके पानी पिलाने का यह समय नहीं था**, क्योंकि सूर्य आकाश पर अभी भी प्रचंड था। कुलपति ने सोचा कि वे वहाँ आलस के मारे हैं और उनको अपने जानवरों का पानी पिलाने के कार्य पर जाना चाहिए और फिर उनको घास चराने के लिए मैदान में कुछ और समय के लिए ले जाना चाहिए। हो सकता कि उसने रूखे अंदाज में कहा हो, **भेड़ों को पानी पिलाओ और जाओ उनको मैदान में चराओ।** क्योंकि याकूब भ्रामक रणनीति करने में होशियार था, यह भी सम्भव हो सकता है कि उसका चरवाहों के प्रति रूखा रवैया उनसे पीछा छुड़ाने की एक चाल हो ताकि उसके पास कुएँ पर अकेले में राहेल के साथ बिताने के लिए कुछ समय मिल जाए।

आयत 8. याकूब के व्यवहार ने हो सकता है चरवाहों को परेशान कर दिया हो, परन्तु वह उसके कहने से हटे नहीं। उन्होंने उसकी आलोचना का यह कहते हुए उत्तर दिया, **हम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब सब झुंड इकट्ठे होते हैं।** उन्होंने कहा कि वे अन्य चरवाहों की राह देख रहे हैं ताकि **वह पत्थर को कुएँ के मुँह से हटा सकें** और **भेड़ों को पानी पिला सकें**। उनकी बात उसी बात को प्रकट करती है जो बाइबल अंश 29:3 में पहले ही से कहा गया है। उन्होंने जो भी कहा उनकी परवाह किए बिना, याकूब ने उनकी प्रथा के अनुसार नहीं समय बिताया होगा।

आयत 9. जब वह चरवाहों के साथ बातचीत कर ही रहा था, **राहेल** जो **चरवाहन** थी, अपने **पिता की भेड़ों के साथ** आ पहुँची। उसका अचानक आना परमेश्वर के दिव्य कार्य की एक बार फिर याद करवाता है (देखें 24:15)।

आयत 10. राहेल उसकी **माँ के भाई की पुत्री** थी। उसे देखते ही, **याकूब** ने निकट जाकर कुएँ के मुँह पर रखे **पत्थर को लुढ़का दिया**। यह तो बहुत ही साहसिक कार्य था; आमतौर पर, इसे लुढ़काने के लिए कई चरवाहों की ज़रूरत होती थी। इसके अतिरिक्त, याकूब ने अपने मामा लाबान की **भेड़ों को पानी पिलाया**। 29:9, 10 में तीन बार बाइबल अंश उल्लेख करता है कि राहेल अपने पिता **लाबान** की **भेड़ें** चराती थी। लाबान की भेड़ों का बार बार उल्लेख संकेत करता है कि याकूब ने पत्थर को हटाने से और जानवरों को पानी पिलाने से अपने मामा और राहेल दोनों के दिलों को जीतने का इच्छा की। आखिरकार वह हारान तक खाली हाथ यात्रा करके आया था, बिना दहेज या किसी अन्य सामान से उसे उनको प्रभावित करने के लिए था।

आयतें 11, 12. उसे उसकी मंज़िल तक पहुँचाने में परमेश्वर की अगुवाई का मौखिक रूप से धन्यवाद करने जैसे अब्राहम के सेवक ने किया था उसकी बजाए (24:26, 27), **याकूब ने राहेल का चूमा और ऊँचे स्वर से रोने लगा।**[4] प्राचीन पूर्वी देशों के रूढ़िवाद में, किसी पराए का किसी युवा स्त्री को चूमना आमतौर पर उनकी संस्कृति के उल्लंघन के रूप में देखा जाता था। उसकी जल्दबाज़ी ने उसे गम्भीर परिणामों का उत्तरदायी ठहरा दिया होगा। परन्तु, याकूब के खुशी

के आँसू जब वह मिले तो यह स्पष्ट साक्षी थी कि उसका आगे बढ़ना राहेल के लिए आदरणीय था। उसने उसी समय **राहेल को बताया मैं तेरा फुफेरा भाई हूं, अर्थात् रिबका का पुत्र हूँ**। जब उसने यह सुना तो वह दौड़कर नगर में गई और अपने **पिता को बताया**।

आयत 13. याकूब ने पहले ही कुएँ के पत्थर को हटाने और उसकी भेड़ों का पानी पिलाने के द्वारा रिबका की स्थिति का प्रतिउत्तर दे दिया था। उसी तरह से, जब **लाबान ने सुना** कि **याकूब उसका भांजा है** जो कनान से आया है, तो वह उसे मिलने के लिए दौड़कर गया। बाइबल अंश कहता है कि उसने उसे **गले लगाया** और **उसे चूमा**।[5] कुलपति की संस्कृति में इस तरह से अपनी भावना प्रकट किया जाता था और यह आज भी कुछ समाजों में दिखाई देती है। लाबान के इस तरह के हार्दिक स्वागत के बाद, वह **उसे अपने घर** हारान में ले आया।

इस घटना ने बहुत समय पहले हुई अब्राहम के सेवक के आने की घटना को दोहरा दिया। वह दस ऊँट सोने, चाँदी और कीमती उपहारों से लदे हुए दहेज के रूप में लाबान की बहन रिबका के लिए लाया था (24:10)। कुएँ पर सेवक से मिलने के बाद, वह दौड़कर अपने घर गई और अपने परिवार को बताया। प्रतिउत्तर में, सेवक से मिलने के लिए चश्मे की ओर दौड़ा (24:29)। 29:13 में, क्या लाबान का शीघ्रता से अपने भांजे को मिलने जाना, इस धनी परिवार से अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा को दर्शाता था? यदि ऐसा होता तो वह उसी क्षण निराश हो जाता। जो कुछ याकूब के पास था उसे कुछ और देकर वहाँ से भेज दिया जाता।

जब याकूब ने **लाबान को सारी बातें बताईं**, तो उसने अपने बीते हुए जीवन के विषय कितना बताया होगा? अपने बीते हुए विवरण के साथ, याकूब ने सम्भवतः लाबान को बड़े ध्यानपूर्वक कुछ विशेष बातों को ही बताया होगा, ताकि वह अपने मामा के सामने बुरा या बेअकल न हो। क्योंकि याकूब हारान में बिना किसी उपहार या कीमती वस्तु के आया, लाबान पर यह स्पष्ट हो गया था कि घर में उसकी स्थिति वैसी नहीं थी जैसी होनी चाहिए थी। जिसका अर्थ है याकूब उसकी दया पर था, क्योंकि उसके पास कहीं और जाने का कोई उपाय नहीं था।

आयत 14. लाबान ने याकूब का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए कहा, "तू तो सचमुच मेरी हड्डी और मांस है।" अपने निकट सम्बन्धी के विषय में बताने का यह एक तरीका था (देखें 2:23; 37:27; न्यायियों 9:2; 2 शमूएल 5:1; 19:12, 13)। लाबान अपने भांजे को घर ले गया और अपने परिवार से मिलवाया और याकूब उनके साथ रहा। याकूब ने आभारपूर्वक इस सेवा भाव को ग्रहण किया और उनके साथ **एक महीना रहा**। यही वह समय था जब लाबान ने याकूब को अपने दामाद के रूप में उसकी क्षमता का मूल्यांकन किया; आगे चलकर, इसने उसको धनी होने के लिए इस स्थिति के अवसर का लाभ उठाने की योजना बनाई। उसी समय, इससे याकूब को राहेल के लिए इच्छा को विकसित करने का पर्याप्त समय मिल गया - इतनी तीव्र इच्छा कि वह उससे विवाह करने के लिए

अपने मामा के पास कई वर्षों तक मज़दूरी करने के लिए सहमत हो गया। जैसा लाबान ने अपनी योजना को तैयार किया था, उसने अपनी चालाकी से याकूब को मात दे दी।

राहेल और लिआ के सम्बन्ध में लाबान का याकूब के साथ धोखा (29:15-30)

15तब लाबान ने याकूब से कहा, "भाईबन्धु होने के कारण तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित नहीं है, सो कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं?" 16लाबान के दो बेटियां थी, जिन में से बड़ी का नाम लिआ: और छोटी का राहेल था। 17लिआ: के तो धुन्धली आंखे थी, पर राहेल रूपवती और सुन्दर थी। 18सो याकूब ने, जो राहेल से प्रीति रखता था, कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा। 19लाबान ने कहा, उसे पराए पुरूष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा; सो मेरे पास रह। 20सो याकूब ने राहेल के लिये सात बरस सेवा की; और वे उसको राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े। 21तब याकूब ने लाबान से कहा, मेरी पत्नी मुझे दे, और मैं उसके पास जाऊंगा, क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है। 22सो लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुला कर इकट्ठा किया, और उनकी जेवनार की। 23सांझ के समय वह अपनी बेटी लिआ: को याकूब के पास ले गया, और वह उसके पास गया। 24और लाबान ने अपनी बेटी लिआ: को उसकी लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी जिल्पा दी। 25भोर को मालूम हुआ कि यह तो लिआ है, सो उसने लाबान से कहा यह तू ने मुझ से क्या किया है? मैं ने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, सो क्या राहेल के लिये नहीं की? फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है? 26लाबान ने कहा, हमारे यहां ऐसी रीति नहीं, कि जेठी से पहिले दूसरी का विवाह कर दें। 27इसका सप्ताह तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रह कर और सात वर्ष तक करेगा। 28सो याकूब ने ऐसा ही किया, और लिआ: के सप्ताह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल को भी दिया, कि वह उसकी पत्नी हो। 29और लाबान ने अपनी बेटी राहेल की लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी बिल्हा को दिया। 30तब याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति लिआ: से अधिक उसी पर हुई, और उसने लाबान के साथ रहकर सात वर्ष और उसकी सेवा की।

आयत 15. लेख यह नहीं बताता है कि महीना भर जब वह अपने कुटुम्बियों के साथ रहा तो याकूब ने अपना समय कैसे व्यतीत किया, परन्तु यह मान लेना उचित होगा कि उसने दो उद्देश्य पूरे करने का प्रयास किया होगा: (1) वह अपने मामा लाबान पर प्रभाव डालना चाहता था कि वह परिश्रमी व्यक्ति है और उसकी बेटी की अच्छी देखभाल करेगा। इसलिए, हो सकता है कि वह प्रतिदिन उसकी बेटी के साथ बाहर जाता और उसके साथ चरवाहे का काम करता, तथा

घर के अन्य काम भी करता था। (2) वह राहेल को और भली भांति जानना चाहता था, उसका हृदय जीतना चाहता था, जिससे कि वह स्वेच्छा पूर्वक उसके साथ कनान जाए, जैसे कि बहुत वर्ष पहले उसकी फूफी रिबका इसहाक से विवाह करने गई थी।

महीने के अन्त में याकूब के मामा ने उससे कहा **"कुटुम्बी होने के कारण तुझ से मुफ़्त में सेवा कराना मेरे लिए उचित नहीं है"** और आगे ज़ोर देकर उससे पूछा **"इसलिये कह मैं तुझे सेवा के बदले क्या दूं?"** ऊपरी तौर पर लाबान के प्रश्न बड़े उदार और मित्रता पूर्ण प्रतीत होते हैं। वह अपने भांजे की सेवा के बदले उसे मेहनताना देना चाह रहा था। याकूब के पास, अभी यह जान पाने का कोई तरीका नहीं था, कि उसका कार्य और वेतन उनके बीच वर्षों तक चलने वाले बैर का कारण हो जाएगा, या यह कि उसे अपने मामा के हाथों शोषण सहना पड़ेगा (देखें 31:38-42)।

आयत 16. इस बिन्दु पर आकर, लेखक पृष्ठभूमि की महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए मुख्य कथानक को छोड़ देता है। वह समझाता है कि **लाबान की** [वास्तव में] **दो बेटियां थीं, जिन में से बड़ी का नाम लिआ: और छोटी का राहेल था।**[6] कुछ नई मान्यताओं के विपरीत, लिआ का नाम, जिसका अर्थ "गाय" है, राहेल के नाम, जिसका अर्थ "भेड़" है, की तुलना में अपमानजनक नहीं था। दोनों ही नाम लड़कियों के लिए उचित थे जो चरवाहों के परिवार में पैदा हुई थीं जो अपने मवेशियों को बहुमूल्य समझते थे। अपमानजनक बात तो यह है कि लाबान ने लिआ और राहेल के साथ ऐसा बर्ताव किया मानो वे भी मवेशी थीं। उनके पिता ने उन्हें व्यापार और सौदेबाज़ी के लिए माल के समान प्रयोग किया। यह केवल संसकृति की बात नहीं थी। जिस प्रकार उसने उन्हें "बेच" दिया था और "[उनके] दाम को खा लिया," बाद में दोनों स्त्रियों ने इस बात के लिए अपना रोष जताया (31:15)।

आयत 17. लाबान की दोनों बेटियों में ना केवल आयु का फ़र्क था वरन स्वरूप का भी था। NASB के अनुसार लिआ की आँखें कमज़ोर थीं, परन्तु **राहेल स्वरूप और चेहरे दोनों ही से सुन्दर थी**। कई अन्य अनुवाद इब्रानी शब्द רַךְ *(राक़)* का अनुवाद "कमज़ोर" करते हैं (RSV; NIV; NJPSV; NCV; ESV)। इसके अतिरिक्त, NEB और REB बताती हैं कि लिआ "मन्द-आँखों" वाली थी। ये चित्रण अपमानजनक हैं।[7] इनका यह अर्थ भी हो सकता है कि लिआ की आँखों में वह "चमक और आग नहीं थी जिसे पूर्व के लोग सुन्दरता के लिए कीमती आँकते हैं"[8] जो प्रकट रूप से राहेल में थी।

वर्णनात्मक शब्द *राक़* का अनुवाद अनुकूलात्मक भाव के साथ "कोमल" या "नाज़ुक" भी किया जा सकता है।[9] कई अनुवाद कहते हैं कि लिआ की आँखें "मनोरम" थीं (NAB; NRSV; NJB; TEV), और कुछ व्याख्या कर्ता मानते हैं कि उसकी "सुन्दर आँखें" थीं।[10] यदि इब्रानी शब्द की यह समझ सही है, तो, संभवतः लिआ की सबसे आकर्षक बात थी उसकी "मनोरम" आँखें, जबकि राहेल संपूर्णतया आकर्षक थी। वह "स्वरूप और चेहरे दोनों ही से सुन्दर थी।"

इस संदर्भ में "राक" का सटीक अनुवाद अनिश्चित है, लेकिन इन दोनों युवतियों में तुलना अवश्य लाई गई है। राहेल अपनी बहिन से कहीं अधिक सुन्दर थी। यह अधिक सुन्दर होना याकूब द्वारा राहेल को पत्नी होने के लिए चुनने (29:18) और लिआ से अधिक उससे प्रेम करने (29:30) का कुछ सीमा तक स्पष्टिकरण देता है।

आयत 18. लाबान के पहले किए गए प्रश्न पर लौटते हुए, "क्या इसलिए क्या तू मुफ़्त में मेरी सेवा करेगा?" (29:15), लेखक समझाता है कि याकूब राहेल से प्रेम करता था और फिर उसके प्रतिउत्तर को दर्ज करता है: **मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिए सात वर्ष तेरी सेवा करूँगा।** सौदा करने से याकूब हानि में था। उसका मुख्य उद्देश्य सेवा से पैसा कमाना नहीं था। वह हारान पत्नी खोजने के लिए आया था, लेकिन वधू का दाम देने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। इसलिए उसने लाबान के सामने राहेल के लिए सात वर्ष सेवा करने का यह उदार प्रस्ताव रखा। संभवतः यह उसके मामा की आशा से कहीं अधिक बढ़ कर था। नूज़ी दस्तावेज़ों के अनुसार (पंद्रहवीं शताब्दी ई.पू. से), वधू का प्ररूपी दाम तीस से चालीस शेकेल होता था। क्योंकि चरवाहे का वेतन दस शेकेल प्रति वर्ष होता था, राहेल के लिए सात वर्ष तक काम करने के द्वारा याकूब वधू के अपेक्षित दाम से लगभग दो गुना देने का प्रस्ताव कर रहा था।[11] वह उसे इससे बहुत कम में भी पा सकता था, लेकिन वह सौदा करने की स्थिति में नहीं था और उसके पिता को नाराज़ करने का जोखिम भी उठाना नहीं चाहता था।

आयत 19. लाबान इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए बहुत प्रसन्न हुआ किंतु प्रतीत होता है कि अपनी सौदेबाज़ी में वह याकूब को धोखा देने का निश्चय पहले ही कर चुका था। उसने उत्तर दिया, **उसे पराए पुरुष को देने से तुझ को देना उत्तम होगा** और उसने **साथ रहकर** अपनी वचनबद्धता निभाने को कहा। याकूब के अनुरोध में यह स्पष्ट था कि वह अपने मामा की "छोटी बेटी राहेल" (29:18) से विवाह करना चाहता है, लेकिन लाबान द्वारा अपने भान्जे के साथ हुई सहमति के बजाय अपनी बेटी के नाम के "उसे" का प्रयोग करना शायद उसका जान बूझ कर दोगला होना दिखाता है।

आयत 20. कहानी के अगले भाग में, लेखक ने थोड़े से ही शब्दों में प्राचीन लेखों में पाया जाने वाला मन को छू जाने वाला निर्मल श्रद्धा का उदाहरण प्रस्तुत किया है: **राहेल** के लिए याकूब का प्रेम इतना दृढ़ था कि उसने उसे अपनी वधू बनाने के लिए सहर्ष **सात वर्ष** की सेवा को पूरा कर लिया। स्वाभाविक प्रवृति होती कि वह इतनी लंबी अवधि की सेवा का प्रस्ताव देने के लिए अपने आप को फटकारता और उसे पूरा करने की माँग करने के लिए लाबान के प्रति रोष रखता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ; उसके लिए उसका **प्रेम इतना महान था** कि सेवा के वर्ष उसे **थोड़े ही दिन के समान प्रतीत हुए।**

आयत 21. अपनी सात वर्ष की सेवा को पूरा करके, **याकूब** ने **लाबान** से आग्रह किया: **मेरी पत्नी मुझे दे, ... क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है।** याकूब ने राहेल को "पत्नी" कहकर संबोधित किया यद्यपि अभी विवाह हुआ नहीं था, और

यह प्राचीन रिवाज़ों के अनुरूप था। जिस जोड़े की मंगनी हो जाए उन्हें विवाह के पश्चात के शारीरिक संबंधों के हो जाने से पूर्व ही पति और पत्नी मान लिए जाता था (व्यव. 22:23-25; मत्ती 1:18-25)। इसलिए याकूब ने यह आग्रह नहीं किया कि लाबान उसे राहेल को दे जिससे वह उसकी पत्नी हो सके, वरन यह माँग रखी कि उसकी "पत्नी" उसे दे दी जाए, जिससे कि वह **उसके पास जाऊंगा**, अर्थात उसके साथ यौन संबंध स्थापित कर सके।

आयत 22. लेख में याकूब को दिए गए लाबान के उत्तर को तो दर्ज नहीं किया गया है; वरन, सीधा से लिखा गया है कि **लाबान ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाकर इकट्ठा किया और भोज दिया**। "भोज" के लिए प्रयुक्त शब्द है מִשְׁתֶּה *(मिश्ठेत)*, जो कि पेय पदार्थ जैसे कि दाखमधु (एज़्रा 3:7; दानियेल 1:5, 8, 16), या फिर पूरे भोज समारोह को दर्शाता है (19:3; 26:30; 29:22; 2 शमूएल 3:20)।[12] बाइबल के समय में, विवाह के समारोह, प्रतीकात्मक रूप से सप्ताह भर चलते थे (29:27, 28; न्यायियों 14:10-20)।[13] उनमें वर और वधू दोनों के परिवार और मित्रगण सम्मिलित होते थे और बहुतायत से खाना पीना, आनन्द मनाना होता था। लेकिन इस अवसर पर केवल लाबान का परिवार और मित्र ही उपस्थित थे।

आयत 23. भोज की चरम सीमा पर लाबान ने छलपूर्वक राहेल, जिसके लिए उसने सात वर्ष काम किया था, की बजाए, लिआ का याकूब से विवाह कर देने का षड़यंत्र कार्यान्वित किया। यहाँ विडंबना को अन्देखा नहीं किया जा सकता: जैसे याकूब ने अपने अन्धे पिता को धोखा देने के लिए भेस बदला था, उसी प्रकार लाबान ने वैसा ही छल अपने भांजे के साथ किया। हो सकता है कि आज के पाठकों के लिए इसकी कल्पना करना कठिन हो, किंतु याकूब के समय में, **सांझ** के अन्धेरे में ऐसा धोखा दे पाना सरल था। वधू के वस्त्रों में घूँघट भी होता था (देखें 24:65), और संभव है कि याकूब के मामा ने उसे काफ़ी मात्रा में दाखमधु पिलाया हो, जिससे उसकी चेतना कुन्द हो गई हो (देखें 19:32-35)। जैसे भी हो, उसने अपने षड़यंत्र को सफल कर लिया, **लाबान अपनी पुत्री लिआ को उसके पास ले गया; और याकूब उसके पास गया**, तथा विवाह को संपन्न कर दिया।

आयात 24. एक प्रकार से यह काव्यात्मक न्याय था। धोखेबाज़ ही धोखे में आ गया था, और याकूब का लिआ से विवाह हो गया। यदि एक बार गलत स्त्री के साथ शारिरिक संबंध हो गया, उसे फिर पलटा नहीं जा सकता था। जैसे कि इसहाक के पास याकूब को, उसे एसाव समझकर (27:33, 37), दी गई आशीषों को वापस ले लेने का कोई उपाय नहीं था, याकूब के पास भी, राहेल समझकर लिआ से हुए अपने विवाह को रद्द करने का कोई वैध उपाय नहीं था।[14]

लाबान ने अपनी पुत्री को दहेज देने की रस्म पूरी करी। दहेज प्राचीन समय में, विश्वास निधि या बीमा पॉलिसी के समान होता था जिससे कि यदि पत्नी का तलाक हो जाए या वह विधवा हो जाए तो भी वह अपना निर्वाह कर सके। पूर्व काल के लिखित अभिलेखों से पता चलता है कि दहेज में अकसर कपड़े, घरेलु

सामग्री या अचल सामग्री, सोना, चांदी, या एक दासी जो व्यक्तिगत सेवक का कार्य करती थी, दिए जाते थे। **लाबान ने अपनी बेटी लिआ: को उसकी लौंडी होने के लिये अपनी लौंडी जिल्पा दी।**

आयत 25. प्रातः जब **सूर्योदय** हुआ और याकूब ने अपनी आँखें खोलीं, तो जो सामने था उसे देखकर वह असमंजस में पड़ गया, भौचक्का रह गया: **यह तो लिआ है।** उसने सात वर्ष तक सुन्दर राहेल के लिए कार्य किया था, और अब प्रगट था कि उसकी बजाए विवाह उसकी बहिन से हो गया था। यह एहसास करते हुए कि उसने रात गलत स्त्री के साथ बिताई है, क्रोधित होकर वह **लाबान** के पास गया और उससे सवाल किया: **यह तू ने मेरे साथ क्या किया है?** याकूब की यह पूछताछ उन्ही प्रश्नों के समान है जिन्हें परमेश्वर तथा मनुष्यों ने उत्पत्ति में पहले भी पूछा था (3:13; 4:10; 12:18; 20:9; 26:10)।[15] इन सब का उद्देश्य एक ही था कि व्यक्ति अपने छलपूर्ण कार्य की गंभीरता का सामना करें। याकूब ने अपने ससुर से स्पष्टिकरण माँगा: **मैंने तेरे साथ रहकर जो तेरी सेवा की, तो क्या राहेल के लिए नहीं की? तो फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है?**

आयत 26. लाबान को याकूब से इस विस्फोटक प्रतिक्रिया की अपेक्षा थी और उसने ज़िम्मेदारी को यह कहकर अपने से हटाकर अपने दामाद पर डालने का प्रयास किया कि लिआ की बजाए राहेल से विवाह करना चाह कर गलती उसने ही की थी। उसने कहा, **हमारे यहाँ ऐसी रीति नहीं कि बड़ी बेटी से पहले दूसरी का विवाह कर दें।** हो सकता है कि प्राचीन निकट पूर्व में यह सामान्य प्रथा रही हो (देखें न्यायियों 15:1, 2; 1 शमूएल 18:17-21), लेकिन ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि हर परिस्थिति में यही करना अनिवार्य था। लाबान का तर्क कमज़ोर और ढोंगी था क्योंकि वह जानता था कि याकूब ने सात वर्ष उसकी सेवा राहेल को वधू बनाने के लिए की थी। एक ईमानदार व्यक्ति इस प्रथा के बारे में अपने भांजे को तब ही बता देता जब उन्होंने सर्वप्रथम इस बात का अनुबंध किया था, बजाए इसके कि गलत बहिन के लिए उससे सात वर्ष काम करवाए। इसके अतिरिक्त, यदि यह प्रथा अनिवार्य होती, तो लाबान ने उस सात वर्ष के समय में जब याकूब उसके लिए काम कर रहा था तब लिआ के लिए कोई पति क्यों नहीं ढूँढा? प्रमाण दृढ़ता पूर्वक दिखाते हैं कि लाबान की मंशा अपने अनुबंध के आरंभ से ही लिआ को इस प्रकार से अपने दामाद को ही देने की रही थी। याकूब के पास अपने ससुर के इस छल पर क्रोधित होने का उचित कारण था, लेकिन अब कुछ भी उसे इस फन्दे से छुड़ा नहीं सकता था।

आयत 27. लाबान ने याकूब के क्रोध को शान्त करने के लिए अपना ढोंग जारी रखते हुए उसके सामने उदार लगने वाला एक प्रस्ताव रखा। उसने वायदा किया कि यदि याकूब लिआ के विवाह का **यह सप्ताह पूरा करेगा**, तो वह राहेल को भी उसे वधू के रूप में **दे देगा**; लेकिन याकूब को **और सात वर्ष** लाबान के लिए **काम करना** होगा। याकूब लिआ को पत्नी स्वीकार करने और उसके साथ विवाह समारोह को जारी रखने के लिए चाहे जितना भी अनिच्छुक रहा हो, उसपर लाबान का हाथ भारी था। याकूब अपने घर और पारिवारिक सहायता से

दूर था। अपनी परिस्थिति से बचने का उसे कोई उपाय सूझ नहीं पड़ रहा था। क्योंकि राहेल को पत्नी बनाने की उसकी इतनी तीव्र इच्छा थी और वह उसके लिए सात वर्ष पहले ही कार्य कर चुका था, इसलिए उसने लाबान की अतिशय शर्तें स्वीकार कर लीं।

आयत 28. निश्चय ही **याकूब** उस पर लाद दी जा रही अनुचित माँगों को लेकर अप्रसन्न था; फिर भी उसने लिआ के समारोह के **सप्ताह को पूरा किया**, और फिर लाबान ने उसे अपनी **बेटी राहेल पत्नी होने के लिए दे दी**।

आयत 29. क्योंकि राहेल के लिए समारोह के सप्ताह का कोई उल्लेख नहीं है, संभव है कि वह हुआ ही न हो। बहुत संभव है कि पिता की ठगी के कारण छोटी बेटी को औपचारिक विवाह समारोह से वंचित रहना पड़ा हो। लेकिन, **लाबान ने अपने दासी बिल्हा को भी अपनी बेटी राहेल को दहेज में दे दिया,** और **वह उसकी दासी हो गई।**

आयत 30. प्रतीत होता है कि अपने ससुर के प्रति याकूब का क्रोध शांत हो गया था। फिर भी, दोनों बहिनों से उसके विवाह के कारण उसके घर में अन्दर ही अन्दर तनाव और अप्रसन्नता का माहौल था क्योंकि वह पहली की बजाए दूसरी से अधिक प्रेम करता था। लेख बताता है कि **याकूब राहेल के पास भी गया, और उसकी प्रीति राहेल पर लिआ से अधिक थी, और उसने लाबान की सात वर्ष और सेवा की।**

लिआ के ज्येष्ठ पुत्र (29:31-35)

31जब यहोवा ने देखा, कि लिआ: अप्रिय हुई, तब उसने उसकी कोख खोली, पर राहेल बांझ रही। 32अतः लिआ: गर्भवती हुई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने यह कहकर उसका नाम रूबेन रखा, कि "यहोवा ने मेरे दु:ख पर दृष्टि की है: सो अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा।" 33फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने यह कहा कि "यह सुन के, कि मैं अप्रिय हूं यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया।" इसलिये उसने उसका नाम शिमोन रखा। 34फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, "अब की बार तो मेरा पति मुझ से मिल जाएगा, क्योंकि उस से मेरे तीन पुत्र उत्पन्न हुए।" इसलिये उसका नाम लेवी रखा गया। 35और फिर वह गर्भवती हुई और उसके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ; और उसने कहा, "अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद करूंगी।" इसलिये उसने उसका नाम यहूदा रखा; तब उसकी कोख बन्द हो गई।

याकूब की पत्नियों की उसका प्रेम पाने और उसकी सन्तान जनने की स्पर्धा ने उसके परिवार में तनाव को जन्म दिया (29:31-30:24)। लेकिन यही अब्राहम की वंश के बढ़ने का कारण ठहरा, जिससे इस्राएल राष्ट्र को विकसित होना था।

आयत 31. यह खण्ड इस बात के साथ आरंभ होता है कि, **प्रभु** [यहोवा] **ने देखा, कि लिआ: अप्रिय** שְׂנוּאָה *(शेन)* हुई, जिसका शब्दार्थ है उससे "घृणा" की जाती थी। लेकिन, 29:30 कहता है कि याकूब "राहेल से लिआ से अधिक प्रीति रखता था।" इसका तात्पर्य यह है कि उसे लिआ से कुछ तो प्यार था, परन्तु वह उसकी प्रीय पत्नी राहेल के लिए उसके प्यार के समान तीव्र नहीं था।[16]

याकूब के वधू-कीमत अनुबंध के शेष सात वर्षों में, इस कुलपति ने अपना परिवार बसाना आरंभ कर दिया। लिआ के "अप्रिय" होने के कारण, **यहोवा ने उस की कोख खोली**, जब कि **राहेल बाँझ रही।**[17] इस परिवार में होने वाली घटनाएं ना तो याकूब और ना ही राहेल की आशा के अनुसार थीं। परमेश्वर ने कार्य करके, बजाए राहेल के, अप्रिय लिआ को पहले माँ बनने की आशीष तथा सांत्वना दी। वास्तविकता में यह आकस्मिक प्रतीत नहीं होता है कि राहेल के लिए जो सात अतिरिक्त वर्ष की सेवा याकूब को करनी पड़ी उसमें उसकी सात सन्तान हुईं - छः बेटे और एक बेटी - जो लिआ से हुई। यह दिखाता है कि परमेश्वर के मार्ग अकसर मनुष्यों के मार्गों से भिन्न होते हैं (यशा. 55:8)।

आयत 32. बहुत प्रत्याशा के साथ **लिआ** ने **बेटे** को जन्म दिया और उसका नाम रूबेन (רְאוּבֵן, *रूबेन)* रखा, जिसका अर्थ होता है, "देखो, एक पुत्र!" यह नाम देने के द्वारा उसने बड़े आनन्द को प्रगट किया, जो उसके कथन **"यहोवा ने मेरे दुःख पर दृष्टि"** (רָאָה, *रआह)* की है। उसने सोचा, **"निश्चय ही अब मेरा पति मुझ से प्रीति रखेगा,"** लेकिन उसे निराश होना पड़ा।

आयत 33. लिआ आशावान रही कि उसके गर्भवती होने में परमेश्वर की भागीदारी के कारण उसके पति के विचारों में परिवर्तन आएगा। जब **वह पुनः गर्भवती हुई** और याकूब के लिए दूसरा **बेटा जना**, तो उसने कहा, **"यह सुन कर** [שָׁמַע, *शमा]* **कि मैं अप्रिय हूँ, यहोवा ने मुझे यह भी पुत्र दिया।"** "सुनना" शब्द का अलंकारिक प्रयोग करते हुए उसने **उसका नाम शिमोन** (שִׁמְעוֹן, *शिमओन)* रखा।[18] उसका विश्वास था कि परमेश्वर ने उसके अप्रिय होने के विलाप को सुना है, और उसकी आशा थी कि वह उसकी परिस्थिति को सुधार देगा।

आयत 34. तीसरी बार लिआ **गर्भवती हुई** और पुत्र जनी; और उसने सोचा, **"अब की बार** ['अब अन्ततः'; NIV] **मेरा पति मुझ से मिल** [לָוָה, *लावाह]* **जाएगा।"** यह इब्रानी शब्द उन लोगों के लिए प्रयोग होता था जो औरों के साथ सभी प्रकार की गतिविधियों में, जिन में पैसा उधार देना (निर्गमन 22:25; व्यव. 28:12, 44; भजन 37:26), बलवा करना (भजन 83:8), आराधना और प्रभु की सेवकाई करना (गिनती 18:2, 4; यशा. 56:3; ज़कर्याह 2:11), तथा "पति एवं पत्नी का वैवाहिक जुड़ जाना" सम्मिलित था।[19] लेकिन लिआ की प्राथमिक इच्छा वैवाहिक जुड़ने की नहीं थी, क्योंकि यह तो उसे पहले ही प्राप्त था, **याकूब से उससे तीन पुत्र हुए थे**। इसलिए उसने इसका **नाम लेवी** (לֵוִי, *लेवी)* इसलिए रखा क्योंकि वह हृदय और आत्मा में अपने पति के साथ सच्चे प्रेम में "जुड़" जाना चाहती थी।

आयत 35. लिआ चौथी बार **गर्भवती हुई** और **पुत्र** जनी; परन्तु इस बार उसने अपने प्रति याकूब के प्रेम की घटी के कारण अपने किसी कष्ट का उल्लेख

नहीं किया। इसकी बजाए, उसने कहा, **"अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यवाद (יָדָה, *यादाह)* करूँगी।"** इसलिए, **उसने उसका नाम यहूदा [יְהוּדָה, *येहुदा]* रखा** जो कि (יְהוּדִיָה, *यहूदिया)* का संक्षिप्त रूप हो सकता है जिसका अर्थ है "याह[वाह] की स्तुति हो।"[20] फिर लेख कहता है कि **लिआ का गर्भ धारण बंद हो गया**, परन्तु इसका कोई कारण नहीं दिया गया है।

लिआ को पहले बच्चे होने की आशीष देने के अतिरिक्त, परमेश्वर ने बाद में उसकी सन्तान के वंशजों में से दो को इस्राएल राष्ट्र में ऊँचा उठाया। उसने लेवी को याजकीय गोत्र और यहूदा को राजकीय गोत्र बनाया। क्योंकि मसीह यहूदा के गोत्र से आया, उसका संसार में आना लिआ के वंश से हुआ (मत्ती 1:1-17; लूका 3:23-34)।

अनुप्रयोग

परमेश्वर की ईश्वरीय उपस्थिति (अध्याय 29)

बेतेल में याकूब के परमेश्वर के दर्शन के पश्चात, जिसमें उसे परमेश्वर से प्रतिज्ञा मिली कि वह उसके साथ रहेगा और उसे आशीष देगा (28:10-15), कुलपति हारान की अपनी यात्रा पर फिर से चल पड़ा। NASB सिर्फ़ इतना कहती है, "फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया" (29:1); परन्तु इब्रानी का शब्दार्थ है उसने "अपने पाँव उठाए।" यह दिखाता है कि, एसाव के भय और लुटेरों की अनिश्चितता से अब बोझिल होने की बजाए, जैसा कि संभवतः घर छोड़ने के पश्चात उसने अनुभव किया होगा, कुलपति के कदमों में अब नया भरोसा था। याकूब को परमेश्वर का मार्गदर्शन प्रगट रहा होगा जब वह हारान के पास कुएँ पर आया और उसे वो चरवाहे मिले जो लाबान को जानते थे। निश्चय ही यह आकस्मिक नहीं था कि वे उसे लाबान की बेटी राहेल को भी दिखा सके जो अपनी भेड़ों के साथ कुएँ की ओर आ रही थी।

जैसे ही याकूब ने राहेल को देखा उसे उससे प्रेम हो गया। "परमेश्वर का आनन्द" उसकी "सामर्थ" था (नहेम्य. 8:10), और इस कारण ही वह उस भारी पत्थर को हटा सका जिससे कुआँ ढका हुआ था ताकि वह उसके रेवड़ को पानी पिला सके। इन ईश्वरीय घटनाओं ने याकूब को इतनी गहराई से छुआ कि उसने अपनी ममेरी बहन को आलिंगन में भर कर चूमा, और आनन्दित होकर ऊँचे स्वर से रोने लगा (29:9-11)। शीघ्र ही उसने वह प्रक्रिया आरंभ कर दी जिसमें होकर राहेल उसकी पत्नी बन सके, और इसका एक भाग था उसके पिता से वायदा करना कि उसके वधू मूल्य में वह सात वर्ष सेवा करेगा (29:15-20)।

याकूब को उन कठिनाईयों की कोई भनक भी नहीं थी जो राहेल के परिवार में विवाह करने के लिए उसे झेलनी पड़ीं। लेकिन इन सभी संघर्षों में, परमेश्वर उसके साथ था, उसे तैयार कर रहा था कि वह बारह पुत्रों का पिता बने जो आगे चलकर इस्राएल के बारह गोत्रों के जनक हो जाएंगे। समय के साथ यह सब मिलकर अब्राहम तथा इसहाक से किए गए प्रभु के वायदे को पूरा करेंगे कि उनके वंशजों से एक महान राष्ट्र बनेगा और उनमें होकर पृथ्वी के सब घरानों के लिए

परमेश्वर की आशीष आएगी (12:2, 3; 15:5, 13-15; 17:4, 5, 16; 22:17, 18; 26:2-4, 24, 25)।

जैसे कि याकूब को हारान की अपनी यात्रा में परमेश्वर की उपस्थिति और मार्गदर्शन की आवश्यकता थी, वैसे ही हर पीढ़ी में विश्वासियों की भी यही आवश्यकता रहती है।

मूसा का उदाहरण। मूसा की मिस्र में राजकुमार की तरह परवरिश हुई। वह भलि भांति "शिक्षित" और "बोलने तथा कार्य में सामर्थी पुरुष" (प्रेरितों 7:22) था। जब वह लगभग चालीस वर्ष का था, उसने सोचा कि वह अपना जीवन अपनी इच्छानुसार चला तथा निर्देशित कर सकता है (जैसा कि याकूब भी कई वर्षों तक सोचता था)। उसने अपनी ओर से इस्राएली व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार करने वाले एक मिस्री को मार डाला, इस विचार से कि उसके लोग उसे अपना छुड़ाने वाला समझकर उसके पास एकत्रित हो जाएंगे (निर्गमन 2:11, 12; प्रेरितों 7:23-25); लेकिन वह दोनों ही बातें, इस्राएल के छुटकारे के तरीके और समय के बारे में भ्रम में था। उसे फ़िरौन के प्रकोप से अपनी जान बचा कर सिनै के बियाबान में भाग जाना पड़ा (निर्गमन 2:15; प्रेरितों 7:29)। लेकिन प्रभु ने ईश्वरीय युक्ति से उसकी देखभाल की, तथा उसके परिवार तक पहुँचाया। वहाँ उसे शरण, एक पत्नी, और चालीस वर्ष तक के लिए एक चरवाहे का काम मिला (निर्गमन 2:16-21; प्रेरितों 7:30)। साथ ही उसे नम्रता भी मिली।

फिर जब मूसा अस्सी वर्ष का हुआ, यहोवा ने उसे वापस मिस्र जाकर उसके लोगों को बन्धुआई से छुड़ाकर वाचा के देश में ले जाने के लिए बुलाया। इतने वर्षों के पश्चात, उसका धृष्ठतापूर्ण स्वाभिमान जाता रहा था, और उसने कई प्रयास किए कि इस खतरनाक कार्य से बच कर निकल सके। मूसा ने तब ही जाना स्वीकार किया जब परमेश्वर ने वायदा किया कि उसकी उपस्थिति उसके साथ रहेगी, जिसका प्रगटिकरण चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के द्वारा होगा, और हारून उसका अधिकृत प्रवक्ता होगा (निर्गमन 3:10-4:17)।

सिनै पर्वत पर हुई सोने के बछड़े की घटना के पश्चात, परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह स्वयं इस्राएलियों के साथ नहीं जाएगा वरन अपना एक दूत उनके साथ वाचा के देश तक जाने के लिए भेजेगा क्योंकि परमेश्वर मार्ग में उनका अन्त कर सकता था (निर्गमन 33:1-5)। मूसा इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ, और उसने परमेश्वर से कहा, "यदि तू आप न चले, तो हमें यहां से आगे न ले जा" (निर्गमन 33:15)। दूसरे शब्दों में, मूसा इस बात पर अड़ गया कि यदि परमेश्वर स्वयं उन्हें लेकर नहीं जाएगा तो वे भी नहीं जाएंगे। उसकी इस विनती के उत्तर में यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं यह काम भी जिसकी चर्चा तू ने की है करूंगा; क्योंकि मेरे अनुग्रह [חֵן, *चेन,* 'अनुग्रह'] की दृष्टि तुझ पर है, और तेरा नाम मेरे चित्त में बसा है" (निर्गमन 33:17)। यहोवा की व्यक्तिगत उपस्थिति ही थी जिससे मूसा को सामर्थ मिलती थी और जिसके द्वारा वह इस्राएलियों को बन्धुआई से निकाल कर वाचा के देश की कगार तक ले आया।

प्रेरितों के उदाहरण। नया नियम भी व्यक्तिगत ईश्वरीय उपस्थिति की

आवश्यकता को दिखाता है। यीशु के चेले इस विचार से बहुत परेशान थे कि वह उन्हें छोड़कर जाने वाला है (यूहन्ना 14:1-3), इसलिए उसने उनसे वायदा किया कि वे पवित्र आत्मा पाएंगे (यूहन्ना 14:17)। वे अनाथ (निःसहाय और अकेले) नहीं रहेंगे, क्योंकि दोनों, वह स्वयं और पिता उनके पास आएंगे (यूहन्ना 14:18, 23)। यीशु के मृतकों में से जी उठने के बाद, उसने प्रेरितों को महान सेवकाई के लिए भेजा, इस वायदे के साथ कि वह "जगत के अन्त तक उनके साथ रहेगा" (मत्ती 28:20)। मरकुस ने इस प्रतिज्ञा के पूरे होने के बारे में बताया और चेलों के जीवनों में मसीह की उपस्थिति का अंगीकार करते हुए कहा, "और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे वचन को, दृढ़ करता रहा" (मरकुस 16:20)।

प्रेरितों ने यीशु की उपस्थिति केवल, या मुख्यतः उन चिन्हों के द्वारा ही अनुभव नहीं की जो उन्होंने अपनी सेवकाई में किए। जैसे याकूब के साथ, परमेश्वर की उपस्थिति और प्रतिज्ञाओं ने उनके कदमों को भी विश्वास से भर दिया। जिस सुसमाचार का वे प्रचार करते थे वह वास्तव में "उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ" (रोमियों 1:16) था क्योंकि यह संसार के लिए परमेश्वर के प्रेम का संदेश था (यूहन्ना 3:16)। इससे भी बढ़कर, उस प्रेम के प्रगटिकरण की पराकाष्ठा स्वयं यीशु मसीह का आना था, परमेश्वर का एकमात्र पुत्र, जो संसार में समस्त मानव जाति पापों के लिए मरने आया (1 तिमु. 1:12-17; 1 यूहन्ना 1:7-2:2; 4:9, 10)। उसकी मृत्यु अन्त नहीं थी: दफ़नाये जाने के बाद, वह मृतकों में से तीसरे दिन जी उठा (1 कुरि. 15:1-6); और फिर उसका स्वर्गारोहण हो गया। उसकी कलीसिया पिन्तेकुस्त के दिन स्थापित हुई जब प्रेरितों ने सुसमाचार का प्रचार किया, और लोगों को पश्चाताप करने तथा बप्तिसमा लेने का आवाहन किया (प्रेरितों 2:22-42; देखें रोमियों 6:1-4)।

प्रेरितों और मसीहियों को जब कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, उन्हें प्रभु की उपस्थिति से सामर्थ मिली। वे ना केवल सताव वरन मृत्यु का भी सामना कर सके क्योंकि वे जानते थे कि परमेश्वर का पुत्र उनके साथ था (प्रेरितों 7:54-60; रोमियों 8:35-39; फिलि. 4:11-13; 2 तिमु. 1:8-12; 2:8-13; इब्रा. 13:5, 6)। यही उपस्थिति प्रत्येक मसीही के साथ रहती है उनके अन्दर निवास करने वाले पवित्र आत्मा के रूप में (प्रेरितों 2:38; रोमियों 8:9-14)।

उपसंहार। हमें अपने आप को इस विचार से भ्रमित नहीं रहना चाहिए कि हम अपने प्राणों के स्वामी हैं। वरन, हमें प्रभु की इच्छा को समर्पित रहना चाहिए। एक स्तुतिगीत से ली गई निम्न पंक्तियाँ परमेश्वर के लिए हमारी आवश्यकता की अभिव्यक्ति करती हैं:

> हे महान यहोवा, मेरा मार्गदर्शक हो,
> इस बंजर भूमि का मैं यात्री हूँ;
> मैं निर्बल, परन्तु आप सामर्थी हो,
> मुझे अपनी बलवान भुजाओं में थामे रहो।[21]

उसके तरीकों के लिए याकूब का अनुशासन (29:1-30)

कनान से हारान की लंबी यात्रा में, जहाँ उसकी मुलाकात लाबान और उसकी सुन्दर बेटी राहेल से हुई, परमेश्वर केवल याकूब को संपन्न करने के लिए ही कार्यरत नहीं था। वह याकूब को अनुशासित करने और उसके जीवन में विद्यमान उसके अनसुलझे पाप का समाधान करने और उस बेहतर व्यक्ति बनाने में भी कार्यरत था। कुलपति के जीवन के इस भाग को, पौलुस के इन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है: "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा" (गला. 6:7)।

याकूब पर अनुशासन आया। याकूब ने अपने भाई एसाव, और अपने पिता इसहाक के विरुद्ध झूठ और धोखा बोया था। राहेल से विवाह करने के अधिकार को पाने के लिए उसने सात वर्ष तक लाबान की सेवा की, लाबान ने लेकिन उसके स्थान पर लिआ को रख दिया। हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं उस सदमे, निराशा, और उस रोष की जिसका अनुभव याकूब ने किया जब उसे एहसास हुआ कि उसके ससुर ने विवाह में उसे गलत स्त्री दे दी। पहली बार, याकूब ने समझा होगा कि उसके भाई एसाव को उसकी आशीषें चुरा लिए जाने पर कैसा लगा होगा। विडम्बना यह है कि, जैसे याकूब को ज्येष्ठ पुत्र एसाव होने का स्वांग भरना पड़ा, ताकि अपने अन्धे पिता को धोखा दे सके, उसी प्रकार जेठी बहन लिआ: ने याकूब को, राहेल होने के स्वांग द्वारा धोखा दिया।

ऐसा प्रतीत होता है कि एसाव द्वारा अपने पिता की मृत्युशैया से मिलने वाली आशीषों के खो दिए जाने के दुःख को लेकर याकूब को कोई परवाह नहीं थी। ना ही हम कोई ऐसा संकेत देखते हैं कि याकूब को कोई परवाह थी कि उसके पिता का हृदय कैसा टूटा होगा जब उन्हें यह एहसास हुआ कि उनके छोटे बेटे ने वे आशीषें धोखे से ले ली हैं जो उन्होंने एसाव के लिए रखी हुई थीं। इसी प्रकार से लाबान को भी उस निराशा या रोष की कोई परवाह नहीं थी जो याकूब को यह जानकर हुई कि उसे राहेल, जिससे वह प्रेम करता था, की बजाए, लिआ को विवाह में दे दिया गया है। लगता है कि लाबान को अपने किए पर कोई पछतावा नहीं था। संभव है कि याकूब के विरुद्ध उसके चतुर छल के सफल हो जाने पर उसने अपने आप को बधाई दी होगी।

जो रोष एसाव ने अनुभव किया, अब याकूब ने भी अनुभव किया; वह लाबान की चालबाज़ी का निःसहाय शिकार था, तथा राहेल के लिए और सात वर्ष काम करने के लिए सहमत ही हो सकता था। याकूब ने एक कष्टप्रद किंतु आवश्यक पाठ सीखा जिसे बाद में एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा: "बुराई पापियों के पीछे पड़ती है" (नीति. 13:21)।

उत्तरी राज्य, "याकूब" पर अनुशासन आया। याकूब द्वारा इसहाक को धोखा देने के सदियों बाद, होशे भविष्यद्वक्ता ने उन लोगों के नाम जो इस्राएल के उत्तरी राज्य में थे एक पुस्तक लिखी। वे 735 ई.पू. में अश्शूरियों से दुःखद प्रहार झेल चुके थे, और तिग्लति-पेलेसर तृतीय उनमें से बहुतेरों को बन्धुआई में ले जा चुका था (2 राजा 15:29)। इसत्राएल का राज्य टूट कर बिखरने को था, यहोवा

ने होशे को बुलाया कि वह लोगों से विनती करे कि वे बाल की उपासना और दस आज्ञाओं के उल्लंघन से पश्चाताप करें तथा परमेश्वर की ओर मुड़ें। यदि वे नहीं मानेंगे तो, अश्शूरियों का एक और आक्रमण, जो उन्हें राज्य के रूप में बर्बाद कर देगा, उन्हें झेलना पड़ेगा।

अपने "प्रचार" में, होशे ने इस्राएल को "याकूब" कहके संबोधित किया।[22] परमेश्वर "[याकूब] के तरीकों" तथा "[याकूब] के कार्यों" के समान (होशे 12:2) आचरण के लिए, लोगों को "दण्ड" देने की चेतावनी दे रहा था। भविष्यद्वक्ता ने कुछ पापों का उल्लेख किया जिन्हें एतिहासिक याकूब ने किया था और जिनका दोषी इस्राएल राज्य भी था: झूठ बोलना (होशे 7:3), घमण्ड (होशे 7:10), धोखा (होशे 7:16), एवं "झूठी शपथ" (होशे 10:4)। उसने अपने श्रोताओं को स्मरण दिलाया कि क्योंकि याकूब कनान में इन सब का दोषी था, इसलिए उसे "अराम के देश" अर्थात उत्तरपश्चिमी मेसोपोटामिया को भाग जाना पड़ा। वहाँ, प्राचीन हारान में, उसे "पत्नी के लिए कार्य" करना पड़ा (होशे 12:12) साथ ही बीस वर्ष तक अपने ससुर के छल को भी झेलना पड़ा।

जब इस भविष्यद्वक्ता ने इस्राएल को याकूब के पापों और उनके परिणामों का स्मरण करवाया, उसने यह टिप्पणी भी की "जो वायु बोते हैं" अवश्यंभावी है कि वे "बवण्डर लवेंगे" (होशे 8:7)। दूसरे शब्दों में, यदि परमेश्वर के लोगों ने सोचा कि वे "वायु बो लेंगे" - या पाप करते रहेंगे - बिना जवाबदेही के, तो विषादपूर्ण अचरज उन्हें मिलेगा। लोगों ने शीघ्र ही जान लिया कि उनके पापों के परिणाम उन परिणामों से बहुत बढ़ कर होंगे जो याकूब को झेलने पड़े थे। वे अब राज्यव्यापी बर्बादी और अश्शूर में बन्धुवाई का "बवण्डर" लवने पर थे (होशे 9:3; 10:6; 11:5)।

उपसंहार। याकूब और इस्राएल के लोगों के उदाहरण इतिहास में परमेश्वर के अदृश्य हाथ की गवाही हैं। वह ईश्वरीय विधि से अपने लोगों को अनुशासित करने और उन्हें उनके पापों का बोध करवाने के लिए कार्य करता है, जिससे उन्हें पाप का अन्तिम परिणाम: मृत्यु, ना झेलनी पड़े। इस्राएल को राष्ट्र मृत्यु का सामना करना पड़ा (तुलना करें यहेजे. 18:31), जबकि आज जो अपने पापों से पश्चाताप करने से इन्कार करते हैं उन्हें अनन्त मृत्यु का सामना करना पड़ेगा (रोमियों 6:23)। पौलुस ने गलतिया प्रांत के मसीहियों को होशे के समान शब्दों में सचेत किया: "क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा" (गला. 6:8)।

समाप्ति नोट्स

[1]राहेल के साथ याकूब की पहली भेंट अब्राहम के सेवक की रिबका के साथ (24:10-33) और मूसा की यित्रो की पुत्रियों के साथ हुई के भेंट की समानताओं को दर्शाती है (निर्गमन 2:15-21)। देखें विक्टर पी. हैमिल्टन, *दि बुक ऑफ जेनेसिसः अध्याय 18-50*, दि न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन

दि ओल्ड टैस्टामेंट (ग्रैंड रेपिडस, मिशिगन: डब्लयुएम. बी एर्डमैनस पबलिशिंग कम्पनी, 1995), 254-55. [2]एस. आर. ड्राइवर, *दि बुक ऑफ जेनेसिस*, सातवाँ संस्करण, वेस्टमिंसटर कमैंट्रीज (लंदनः मितुएन कम्पनी, 1909), 269. [3]इसी तरह का मिलता जुलता שָׁלוֹם *(शालोम)* का प्रयोग 43:27 में पाया जाता है, जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा "कुशल हो" और फिर उसने पूछा, "क्या तुम्हारा बूढ़ा पिता कुशल से है?" [4]उत्पत्ति 27:38 में, एसाव अपने गहरे दुःख के कारण "फूट फूट कर रोया।" इसके विपरीत, यहाँ याकूब खुशी के मारे "ऊँचे स्वर से रोया।" [5]लाबान ने चूमे ने असंगत प्रमाणित कर दिया जैसे याकूब ने पहले अपने चूमे से अपने पिता इसहाक को धोखा दिया था (27:27)। (केनेथ ऐ. मैथ्यूस, *जेनेसिस 11:27-50:26*, दि न्यू अमेरीकन कमैंट्री, वाल, 1बी [नेशविलेः ब्रोडमैन & होलमन पबलिशर्स, 2005], 464.) [6]दोनों ही शब्द, "जेठी" (या "बड़ी") एवं "छोटी" जो लिआः और राहेल के वर्णन लिए प्रयुकत हुए हैं, इससे पहले पुस्तक में एसाव और याकूब के वर्णन लिए प्रयुक्त हुए थे (27:15, 42)। [7]विलियम व्हाईट, "רַךְ," *TWOT* में, 2:848. [8]ब्रूस के. वोल्टके, *जेनिसिस: अ कमेन्ट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: ज़ोन्डरवैन पबलिशेर्स, 2001), 405; देकेहं JB; CEV; NLT. [9]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एन्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *अ हीब्रू एन्ड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेन्ट* (ओक्स्फर्ड: क्लैरेन्डौन प्रेस, 1962), 940. [10]हैमिल्टन, 258-59; जॉन ई. हार्टले, *जेनिसिस*, न्यू इन्टरनैशनल बिबलिकल कमेन्ट्री (पीबौडी मैस्स.: हैन्ड्रिकसन पब्लिशर्स, 2000), 261, 263, n. 39.

[11]प्राचीन मेसोपोटामिया में एक वर्ष के काम के लिए वेतन भिन्न भिन्न होता था। फिर भी याकूब का अपने मामा को दिया गया प्रस्ताव बहुत उदार प्रतीत होता है। देखें जॉन एच. वॉल्टन, *जेनिसिस*, द NIV ऐप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: ज़ौन्डरवैन पबलिशिंग कम्पनी, 2001), 586; और कतारज़ैना ग्रौस्ज़, "डाउरी एन्ड ब्राईड प्राईस इन नूज़ी," इन *स्टडीस ऑन द सिविलिज़ेशन एन्ड कल्चर ऑफ़ नूज़ी एन्ड द हुर्रइन्स*, एड. मार्था ए. मौरिसन एन्ड डेविड आई. ओवेन (विनोना लेक, इन्ड.: आईज़ेनब्रॉन्स, 1981), 176-77. [12]हर्मन जे. औस्टेल, "מַשְׂכֹּרֶת," *TWOT* में, 2:959. [13]टोबिट 11:18 (NRSV)। [14]हार्टले, 262-63. [15]बाद में वृतांत में, लाबान भी याकूब से ऐसा ही प्रश्न करता है (31:26)। [16]"प्रेम" और "घृणा" की इसी प्रकार की तुलना के लिए देखें व्यवस्थाविवरण 21:15-17 और मत्ती 6:24, जहाँ बाद वाले शब्द का अर्थ है "कम प्रेम करना।" मत्ती 10:37, में यीशु ने कहा जो कोई माता पिता या परिवार को उससे अधिक प्रेम करता है वह उसके योग्य नहीं है। इसकी तुलना में लूका 14:26 के कथन से कीजिए, जहाँ प्रभु की माँग थी कि उसका चेला होने के लिए इन ही लोगों से घृणा की जाए। प्रकट है कि "घृणा" का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के लोग अपने माता पिता और परिवार के प्रति बैर या शत्रुता रखें। वरन यह तो बाइबल में प्रभु के चेलों को यह सिखाने की प्राचीन विधि है कि वे उपरोक्त व्यक्तियों से प्रभु के मुकाबले कम "प्रेम" रखें। [17]"बांझ" होने के कारण, राहेल याकूब की दादी सारा (11:30) और उसकी माता (25:21) की श्रेणी में आ गई थी। ये स्त्रियाँ भी कुछ समय तक निःसन्तान रहीं, परन्तु अन्ततः प्रभु द्वारा उन्हें पुत्रों की आशीष प्राप्त हुई। [18]इब्रानी में नाम "इशमाएल" भी "सुनना" शब्द का खेल है (देखें 16:11 पर टिप्पणी)। [19]एन्ड्रयू बोअलिंग, "לָוָה," *TWOT* में, 1:471. [20]ए. आर. मिलर्ड, "द मीनिंग ऑफ़ द नेम जूडाह," *Zeitschrift für die alttestamentliche Wissenschaft* 86 (1974): 217.

[21]डब्ल्यू. विलियम्स, "गाईड मी, ओ दाओ ग्रेट जेहोवाह," *सौंग्स ऑफ फेथ ऐन्ड प्रेज़*, कौम्प. एन्ड एड. ऐलटन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, ला.: हॉवर्ड पबलिशिंग कम्पनी, 1994)। [22]उत्पत्ति 32:28, में याकूब का मलयुद्ध एक "पुरुष" से होता है जो उस कुलपति का नाम बदल कर "इस्राएल" रखता है। लेकिन, होशे इस नाम को वापस पलट देता है क्योंकि पाप की प्रवृति वाला पुराना याकूब पथभ्रष्ट राज्य इस्राएल में लौट आया था।